Chapter-4

चतुर्थ अध्याय

नाटकों में चरित्रों का महत्व, चरित्रों के प्रकार, चारित्रिक विशेषताओं के आलोक में विभिन्न नाटकों की समालोचना ।

चतुर्थ अध्याय

चरित्र सृष्टि

पात्रों का चरित्र–चित्रण नाटक का सर्वप्रमुख एवं स्थायी तत्व है। नाटक की पूर्ण सफलता पात्रों की सजीवता तथा उनकी वास्तविकता पर निर्भर रहती है। भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य शास्त्रों में चरित्र विषय पर विशेष चिंतन हुआ है। भारतीय नाट्य शास्त्र में नाटक के मूल तत्व वस्तु ,नेता और रस माने गये हैं। और पाश्चात्य नाट्य शास्त्र में कथा चरित्र ,भाषा ,विचार दृश्य और गति– विधान तत्व रुप में स्वीकार किए गये हैं। भरतमुनि के नाटक में 'रस ' पर विशेष बल दिया गया है, जबकि अरस्तु ने 'कथावस्तु' को प्रमुखता प्रदान की है। किन्तु भारतीय व पाश्चात्य दोनो दृष्टियों में चरित्र को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

नाटकों में चरित्र का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि चरित्र ही अभिनय के द्वारा नाटकों के कथ्य को दर्शकों तक पहुँचाता है। चरित्र के बौद्धिक गुणों के विषय में डॉ0 भगीरथ मिश्र का मत है–

"बौद्धिक गुणों के भीतर उसका अध्ययन चतुरता, संकर में बुद्धि वैभव आदि की विशेषता आती है।1।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चरित्र को दो भागों में बांट सकते हैं– अंर्तमुखी, बर्हिमुखी।

अंर्तमुखी चरित्र– वे चरित्र हैं, जो अपनी बात को स्पष्ट नहीं करते,गम्भीर हैं। कम बोलते है।

बर्हिमुखी चरित्र–जो स्पष्ट वक्ता है। वे कुछ भी छिपाते नहीं उनका चरित्र बिल्कुल हमारे सामने स्पष्ट है। राजनीति में दोनों प्रकार के चरित्र पाये जाते हैं। आधुनिक नाटकों में जो पात्र जितने अंर्तमुखी और उलझे हुए होते हैं,वे उतने ही सक्षम साबित होते हैं। प्रसिद्ध कथाकार जैनेन्द्र जी का कथन है–"एक कथा की पात्र की या व्यक्तित्व की निजता में जितना गहरा और गम्भीर विरोध समा सकता है उतना ही उसका महत्व है"। 2। नाटक में चरित्र एक महत्वपूर्ण उपादान है। डॉ0 गुलाब राय ने चरित्र के विषय में अपना मंतव्य व्यक्त किया है ।–

1–डॉ. भगीरथ मिश्र– काव्य रस पृ. 79

2– जैनेन्द्र कुमार – साहित्य का श्रेय और प्रेय पृ0 180

"चरित्र से तात्पर्य है पात्र या मनुष्य के व्यक्तित्व का बाह्य और आंतरिक स्वरुप । मनुष्य का बाह्य,उसका आकार– प्रकार,वेशभूषा , आचार– विचार,रहन–सहन, चाल–ढाल, बातचत का निजी ढंग तथा कार्य कलाप आदि उसके अंतःकरण आदि का बहुत कुछ प्रतीक होता है।" |1।

पात्र के विकास वर्ग की दृष्टि से पात्र गतिशील व स्थिर होते हैं। गतिशील पात्र वे हैं जो परिस्थितियों के अनुसार स्वयं परिवर्तित हो जाते हैं,जिनमें अनुकूलन की क्षमता है। स्थिर पात्र सभी परिस्थितियों में एक सा व्यवहार करते हैं। वे डिगते नहीं वे किसी एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे 'टाइप' चरित्र होते हैं। नाटक में चरित्र सृष्टि कहते ही परम्परागत नाट्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित होता है। जैसे आधुनिकता में परम्परा की तलाश कर रहे हैं या परम्परा को सामने रख कर आधुनिक जीवन पद्धति में आए बदलाव की ओर देख रहे हैं। कविराज विश्वनाथ ने अपने 'साहित्य–दर्पण' में नायक (नेता) की चर्चा करते हुए लिखा है–" नायक वह है जो त्याग भावना से भरा हो, महान कार्यो का कर्ता हो, कुल का महान हो, बुद्धि वैभव से सम्पन्न हो, निरन्तर उद्योगशील रहने वाला हो ,जनता का स्नेह भाजन हो, तेजस्विता, चतुरता और सुशीलता का निदर्शक हो। " |2।

नेता व नायक वह प्रधान पुरुष पात्र हैं जो मुख्य चरित्र का संवाहक है, कथा को फल की ओर ले जाता है,कथावस्तु उसके इर्द–गिर्द घूमती है, नायिका के लिए वह वरेण्य है। दर्शक ,पाठक उसी के विकास उत्थान में रुचि रखते हैं। संस्कृत नाट्यशास्त्रों में नायक के चार भेद दिये गये हैं।

"1–धीरोदान्त 2–धीरललित 3–धीरप्रशान्त 4–धीरोद्धत"। 1।

संस्कृत के प्रसिद्ध नाटकों में नायक की स्थिति उच्चतम स्थान पर है। उनके पात्र सर्वगुण सम्पन्न सभी विशेषताओं से विभूषित हैं। बाल्मीकी रामायण में श्री रामचन्द्र जी,श्रीमद्भागवत में श्री कृष्ण जी,कालिदास के नाटक अभिज्ञान शकुन्तलम् में दुष्यन्त की

1– काव्य के रूप – डॉ. गुलाब राय पृ0 178

2– त्यागी कृती कुलीनः सुश्री को रूप यौवनोत्साही
दक्षोऽनुरक्त लोकस्ते जो वैदग्ध्य शीलवान्नेता।'

सत्यव्रत सिंह--व्याख्याकार,साहित्य दर्पण पृ. 138।

भूमिका,मेघदूत में यक्ष,भास के नाटकों में उदयन, कृष्ण,भीम, सभी सर्वगुण सम्पन्न हैं। वे राजकुल के हैं। उनका राजवंशी, देवर्षि होना अनिवार्य है।

नायक के अतिरिक्त दूसरा महत्वपूर्ण पात्र नायिका का होता है। "नायक के अतिरिक्त नायिका (नायक की प्रिया या पत्नी) का भी विषद वर्णन नाट्यशास्त्रियों ने किया है। नाटक के कथा प्रवाह में जिस स्त्री पात्र का मुख्य भाग हो,चाहे वह नायक की प्रिया हो,न हो, वह नायिका हो सकती है।" |1|

नायक के समान नायिकाओं के गुण स्वभाव का वर्णन भारतीय नाट्यशास्त्रों में किया गया है। आचार्य भरतमुनि ने नायिका के चार भेद बताये है। 1—दिव्या 2—नृपतिनी 3—कुलस्त्री 4—गणिका । पर भेद मान्य नहीं हुए । सर्वमान्य दृष्टि से नायिका के तीन भेद किये गये हैं।—

1—स्वकीया 2—परकीया 3—सामान्या ।

नायिका के कई भेद —विभेद किए गए। आधुनिक नाट्य रचना में ये नियम घटित नहीं होते।पाश्चात्य विद्वानों ने नायिका के इतने भेद —उपभेद नहीं किए। नायिका मृदुभाषिणी,सुन्दर व सुशील होनी चाहिए। भरतमुनि ने नायिका की विशेषताओं को अलंकार कहा है।

नायक नायिका का दूसरा वर्गीकरण उत्तम, मध्यम,व अधम है जो स्वभाव के अनुसार है। नायक व नायिका को उत्तम प्रकृति का ही होना चाहिए। अधम प्रकृति के स्त्री पुरुष को नायक या नायिका के रुप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। नायक का धैर्यवान होना अनिवार्य है। उसे अधम प्रकृति का नहीं होना चाहिए। हमारी नाट्य परम्परा व्यक्ति के व्यक्ति होने को सार्थक तभी मानती है , जब वह नायक के गुणों को अपने भीतर रखता हो तथा उस चरित्र की कल्पना करने लगती है जो व्यक्ति को अधम से उत्तम की ओर ले जाता है। और यहीं इस बात की पुष्टि ट हो जाती है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व परिस्थितियों के सापेक्ष नहीं बनता। परिस्थितियों को चुनौती देकर निर्मित होता है। जिसमें परिस्थितियों को चुनौती देने की सामर्थ्य जितनी अधिक है वह व्यक्ति उतना ही उत्तमता के अधिक समीप ठहर कर अपने को नायक घोषित करता है। 'धीर' शब्द परिस्थितियों को चुनौती देकर स्थिर होने का दूसरा नाम है। धीर होना नायक की पहली शर्त है। नायक के वर्गीकरण में सभी प्रकार के नायकों का धीर होना अनिवार्य है।

1— हिन्दी नाटकसिद्धान्त और विवेचन — डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 40

धीरोद्धत नायक का भी धीर होना आवश्यक है। धीरोद्धत नायक रावण है। पर वह नायक तभी है जब धीर है। किन्तु आज धीर की जगह केवल उद्धत ही रह गया है।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि व्यक्ति का चरित्र स्थिर और धीर हो, किन्तु उसकी सार्थकता समाज विरोधी होने में नहीं है–समाज का हितैषी होने में है। व्यक्ति के चरित्रवान होने की अनिवार्य शर्त उसका सामाजिक स्वरूप है, जो समाज के सामने अच्छे आदर्श प्रस्तुत करे। नायक के समानान्तर एक चरित्र चलता है जो नायक के चरित्रवान होने की स्थितियों को उभारकर हमारे सामने रखता चला जाता है जिसे प्राचीन नाट्य में खल नायक कहते थे। आज के नाटकों में उसका रूप इतना स्पष्ट नहीं है। और आवश्यकता भी नहीं है। इस तरह परम्परागत नाट्य नाटक के उन गुणों को जो समाज सापेक्ष सार्थक भूमिका अदा करते है, गुण कहता है,जो विरोधी तत्व है उन्हें अवगुणी । कुल मिलाकर संस्कृत नाट्य व्यक्ति द्वारा किए गये कार्यों को महत्वपूर्ण मानता है,न कि उसपर परिस्थितियों और समस्याओं द्वारा डाले गये प्रभाव को। उसी के चरित्र की सार्थकता है जो परिस्थितियों और समस्याओं को अपने अनुसार मोड़ सके ।

अगर हम निष्पक्ष होकर देखें तो उस बिन्दु पर जहाँ हिन्दी नाटक का जन्म होता है , हिन्दी नाटक अपने इस परम्परागत नायक से जाने–अनजाने विरोध कर रहा होता है। व्यक्ति एक सीमा तक परिस्थितियाँ उस पर हावी हो जाती हैं , और नायक का चरित्र वह भी है , जो समस्याओं से टकराता है। समस्याओं के कारगर होने के बाद उसके द्वारा निर्मित होता है। इस प्रकार परिस्थितियों से जूझता हुआ पुरुष उत्तम,मध्यम व अधम नहीं रह जाता , वह एक व्यक्ति रहता है , कहीं समाज विरोधी और कहीं समाज सापेक्ष। इस प्रकार वह आदर्श मात्र नहीं रह जाता, यद्यपि यथार्थ को झेलता हुआ एक आदर्श रह जाता है।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने अपने नाटक निबन्ध में स्पष्ट लिखा है –" अब नाटकादि दृश्यकाव्य में अस्वाभाविक सामग्री परिपोषक काव्य सहृदय काव्य मंडली को नितान्त अरुचिकर है , इसलिए स्वाभाविक रचना ही इस काल के सभ्यगण की हृदयग्राहिणी है , इससे अब अलौकिक विषय का आश्रय करके नाटकादि दृश्यकाव्य प्रणयन करना उचित नहीं है।"–1

1– भारतेन्दु ग्रन्थावली – स,ब्रजरत्न दास पृ0 755

यहाँ भारतेन्दु ने दो शब्दों का प्रयोग किया है– एक है 'स्वाभाविक' दूसरा 'अलौकिक' । अलौकिक का विरोधकर स्वाभाविक पर केंद्रित करना हिन्दी नाटककार का परम्परागत नाटककार के रचना विधान से विरोध है। यह भी कह सकते हैं कि आधुनिक युग बोध से विद्रोह है और चूँकि प्राचीन अथवा परम्परागत नाट्य का विधान नेता अथवा नायक को केन्द्र में रखकर ही निर्मित होता है। यहाँ हिन्दी नाटककार परम्परागत नायक अथवा नेता का सीधे विरोध करता है। यहाँ नायक नेता के भीतर चरित्र का विरोध नहीं कर रहा है वह नायक की परम्परागत अवधारणा का ही विरोध कर रहा होता है। अर्थात वह शास्त्र सम्मत नायक भी अवधारणा का विरोध कर रहा होता है। इस तरह हिन्दी नाटककार परिस्थितियों और समस्याओं की पहचान करता हुआ हमारे सामने उपस्थित होता है न कि शास्त्र अथवा रूढ़ियों की पहचान कराता हुआ।

यहाँ चरित्र की नयी अवधारणा हमारे सामने उपस्थित होती है। यह अवधारणा व्यक्ति द्वारा समस्याओं और परिस्थितियों से जूझने को भी महत्व देती है। जूझता हुआ व्यक्ति इस अवधारणा के अधिक निकट है,अनुकूल है। व्यक्ति का यह जूझना जितना सही , ईमानदार और सार्थक है। इस युग में व्यक्ति का उतना ही सच्चरित होना सिद्ध है। पराजय यहाँ चरित्र के लिए अभिशाप नहीं बनती –अभिशाप बनता है व्यक्ति का जूझने से कतराना, व्यक्ति का जूझने से कतराना जितना बढ़ता जायेगा , चरित्र उतना गायब होता जायेगा, प्रश्न उठता है जीवन मूल्यों का। ये जीवन मूल्य व्यक्ति के भीतर चरित्र की पहचान न करा कर व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान कराने लगते हैं।

"समसामयिक हिन्दी नाटक और चरित्र सृष्टि" नामक अपनी पुस्तक में जयदेव तनेजा ने एक बात कही है–"नाट्य रचना का गठन और वास्तविक संकट आधुनिककाल में तब उपस्थित हुआ,जब नाटककार के सामने यर्थाथ का सम्पूर्ण जीवन आ खड़ा हुआ, जिसके माथे से उसका सारा जिवनेतर तत्व गायब था,उसकी सारी उदान्तता,सरलता और आनन्द भावना उसके तन–मन से धुल चुकी थी। 'इब्सन' और 'शॉ' प्रसाद, लक्ष्मी नारायण मिश्र और अश्क के सामने भी एक बाहरी आर्दश रहा है, चाहे वह पुनरुत्थान का हो या सामाजिक वैयक्तिक समस्याओं का। वस्तुतः उसके बाद के नाटककारों के सामने नाट्य रचना का जो सूक्ष्म जटिल संकट उपस्थित हुआ, वह अभूतपूर्व था। अनिश्चित और सामान्य जीवन को ऐसे नाट्यशिल्प में बाँधना जिसका कुछ भी पूर्व निर्धारित और निश्चित न हो, जीवन से साक्षात्कार कर उसमें

गहरे उतरकर वास्तविक और मानवीय चरित्रों तथा कथा प्रसंगों को ढूंढना, प्रतिष्ठित और स्थापित को अस्वीकार कर नवीन–कला मूल्यों की निजी तलाश करना सामयिक नाटककार का कर्तव्य कर्म रहा है। जीवन से प्रत्यक्ष जुड़े होने के कारण ही आज का नाटक दर्शक, पाठक को विराट से नहीं जोड़ता , बल्कि विसुन्ध करता है। उसकी चेतन–अवचेतन समाधिस्तता को तोड़कर उसकी ग्रहणशीलता को व्यापक और सघन बनाता है।"1–,

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध हिन्दी साहित्य में मूल्यों की नवीन अभिव्यंजना की दृष्टि से क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने समाज के सड़े–गले जीवन मूल्यों पर प्रहार किया और नवीन मूल्यों की स्थापना के प्रयत्न किए। आज का नायक संस्कृत नाटकों के नायकों से बिल्कुल भिन्न है। जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया गया है कि वह सामान्य व्यक्ति है, उसके लिए किसी राजवंश का होना आवश्यक नहीं है। वह पतित से पतित व्यक्ति भी हो सकता है। इस बदलाव के मूल में अनेकों महत्वपूर्ण कारण हैं। बदलते परिवेश,युगीन परिस्थितियॉं,वैज्ञानिक उपलब्धियॉं, सास्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन ,विश्व सभ्यता का आदान–प्रदान ,आयातित संस्कृति का प्रभाव, मनोवैज्ञानिक आधार आदि अनेको महत्वपूर्ण कारण है। यह परिवर्तन केवल नाटक के क्षेत्र में ही नहीं हुआ है, बल्कि साहित्य की हर विधा में यह परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है। नाटक इतर महिला लेखिकाओं में,ऊषा प्रियम्बदा, शिवानी, अमृता प्रीतम, ने भी अपनी कृतियों में वास्तविक चरित्र की सृष्टि की है। उनके पात्र हमारे अपने हैं,हमारे बीच के हैं। वे किसी और लोक के प्रतीत नहीं होते । वे अपनी हर कमी हर विशेषता के साथ होते हैं। वे मानवीत्व , मानव सुलभ कमजोरियों के साथ होते हैं। जीवन के वास्तविक धरातल पर होते हैं। रचनाकार की कोशिश यह होती है कि आज की समस्यायें, आज की विषमताएँ, संघर्ष के प्रतीक बनकर प्रस्तुत हों ताकि दर्शक उनसे अपनत्व स्थापित कर सकें। महिला नाट्य–लेखिकाओं ने अन्य नाटककारों,लेखिकाओं की तरह ही चरित्र सृष्टि की है। क्योंकि जो परिवर्तन होते हैं , वे सभी विधाओं में समान रुप से होते है, तो महिला नाट्य लेखिकाऐं इन परिवर्तनों को स्वीकार क्यों न करती।

महिला नाट्य लेखिकाओं में 'मन्नू भंडारी' का नाम सुप्रसिद्ध है उनका प्रसिद्ध नाटक 'बिना दीवारों का घर' है। बिना दीवारों के घर में महत्वपूर्ण पात्र अजीत व जयंत हैं।शेष पात्र केवल भूमिका में हैं। अजीत उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पदस्थ, एक खुशहाल पुरुष है। वह अपने

1–समसामयिक हिन्दी नाटक और चरित्र सृष्टि – डॉ. जयदेव तनेजा पृ.–111

प्रयत्नों से पत्नी को उच्च शिक्षा दिलाता है। वहएक प्रतिनिधि प्रतीक चरित्र है। वह आधुनिक नयी पीढ़ी के पुरुषों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो स्वातंत्र्योत्तर समाज की आधुनिक दौड़ में पत्नीको उच्च शिक्षा दिलाकर अपने समकक्ष लाना पसन्द करते हैं,किन्तु पुरातन सीमा में तनिक भी ढ़ील देना नहीं चाहते। अजित के चरित्र द्वारा पुरुष मनोविज्ञान के एक यथार्थ पक्ष को उद्‌घाटित करने का सफल प्रयास किया है। अन्दर से बुरी टूट कर भी तनिक न झुकने वाला अजित का व्यक्तित्व मौलिक व प्रभावोत्पादक है। पत्नी के प्रति उसका दकियानूसी रुढ़िवादी दृष्टिकोण है। लेकिन एक पुरुष के मनोवैज्ञानिक यथार्थ के रुप में रुपायित होता है, जो दर्शक के भीतर गहराई तक पहुँच कर टटोलता है।

इस नाटक का दूसरा प्रमुख चरित्र जयंत है, जो हिन्दी नाट्य जगत का विलक्षण चरित्र है। वह सद्‌पक्ष में भी सटीक बैठता है, और असद्‌पक्ष में भी। जयंत का चरित्र आकर्षक और रोचक है। जयंत भी एक वर्ग चरित्र है। पत्नी से अलग होकर रहता है। अजित का अभिन्न मित्र है, तथा उसके अभिन्न अंग की तरह है। जयंत व अजित के सम्मिलित प्रयत्नों से ही शोभा लेक्चरर बनती है। उसके बाद जयंत लगातार शोभा में महात्वाकांक्षा जगाता है। उसे कॉलेज की प्रिन्सिपल बनने के लिए उकसाता है, और अपने प्रयत्नों में सफल भी होता है। जयंत इसके बाद भी शोभा के तनाव भरे जीवन से निर्लिप्त रहता है,उसमें कहीं भी अतिरिक्त लगाव नहीं दिखाई देता और न शोभा के आचरण से ही ऐसा लगता है। किन्तु जयंत की परित्यक्ता पत्नी मीना से उसके चरित्र पर प्रकाश पड़ता है, जब वह शोभा से कहती है–

" जयंत तुममें बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। तुम्हें कुछ ऐसी राह पर ले जाना चाह रहे हैं,जिस पर चलकर तुम अजित से दूर हो जाओ। शुरु से ही तुम लोगों का सुखी परिवार उसके लिए हलके कष्ट का कारण रहा है।"–1

जयंत का चरित्र यहाँ पर कुछ स्पष्ट होता है। उसके चरित्र की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह जो कुछ भी कर रहा है,अजित व शोभा के अच्छे के लिए कर रहा है। लेकिन उसके ऐसा करने से अजित व शोभा बड़ी तेजी सें एक दूसरे से दूर होते जा रहें है। वह जो भी करता है निर्लिप्त और अनजानेपन में करता है।

मनुष्य निर्मित संसार की सम्पूर्ण उपलब्धियाँ नारी और पुरुष के समान योगदान को प्रतिपादित करती है। जीवन की सुन्दरतम सृष्टि नारी है। जीवन को सर्वाधिक मनोहरता उसी

1– बिना दिवारों के घर – मन्नू भण्डारी पृ0 68

से प्राप्त होती है । जीवन के प्रत्येक कर्मक्षेत्र में नारी की भूमिका अनिवार्य है, उसके बिना कोई भी सृजन नीरस व निर्जीव है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक विकास और जीवन में परिवर्तन की उत्तरोत्तर प्रक्रिया में भौतिक उन्नति के दौर में , नारी और पुरुष में बराबर उपलब्धियों की प्रतिद्वन्दिता को उत्पन्न कर दिया है। नारी चरित्र के बिना कोई भी कृति सम्पूर्ण कैसे हो सकती है। नारी नाट्य लेखिकाओं ने भी अपने नाटकों में नारी चरित्रों की सृष्टि की है।

मन्नू भंडारी कृत "बिना दीवारों के घर" नाटक की चरित्र सृष्टि महत्वपूर्ण है। इस नाटक में प्रमुख स्त्री पात्र हैं–शोभा,मीना और जीजी। मीना और जीजी का भूमिकाएँ संक्षिप्त हैं, लेकिन उनका जो भी चारित्रिक पक्ष सामने आता है , वह महत्वपूर्ण है। शोभा नाटक की नायिका है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त ,उच्च पदस्थ, आधुनिक नारी व आदर्श गृहिणी है। पति के सहयोग से वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदस्थ होती है। उसकी भावनाएँ व आकाक्षाएँ मर्यादित परिवेश के अन्दर ही बदलती हैं। वह पति की इच्छा के प्रतिकूल जयंत की सहायता से कॉलेज की प्राचार्या बनती है। शोभा का पति अजितासे पूर्व दृष्टिकोण से देखता है, उसकी भावनाओं की परवाह नहीं करता । शोभा पीड़ा का अनुभव करते हुए भी समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाती है,पर उनके तनावों का परिणाम अलगाव ही होता है। लेखिका ने शोभा व अजित के माध्यम से परिवारों में बिखराव जैसी ज्वलंत समस्या को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। शोभा आधुनिक शिक्षित उच्च पदस्थ नारी का प्रतिनिधित्व करती है। आधुनिक शिक्षित नारी की मानसिक पीडा और पारिवारिक विसंगति ही शोभा के चरित्र का महत्वपूर्ण पक्ष है। शोभा का सम्पूर्ण चरित्र मनोवैज्ञानिक स्तर पर उद्घाटित है। शोभा की पीड़ा आधुनिक समाज की ज्वलंत समस्या है जो उसके चरित्र द्वारा सामने आती है। पति से समझौते के हर पहलू पर वह लाचार है। पत्नीत्व के साथ उसे मातृत्व भी छोड़ना पड़ता है। बच्ची को लेकर पुरुष उसके लिए चुनौती खड़ी करता है। दकियानूस पुरातन व पारम्परिक दृष्टिकोण वाले पुरुष को अंततः शिक्षित नारी, माँ के ममत्व का परित्याग कर सही जबाब देती है। यहाँ शोभा की जीवंत वेदना अनुभवगम्य होकर प्रत्येक दर्शक को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। डॉ. विजयधर दूबे ने शोभा के चरित्र के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं–

" बिना दीवारों के घर की शोभा जागरूक नारीत्व की पोषिका है। वह अपने पति से स्वतंत्रता की मांग करती हैं–" इस चहारदीवारी से परे भी मेरा अपना कोई अस्तित्व है।"1–

1– साठोत्तरी हिन्दी नाटक – स, विजयकांत दूबे पृ0 62

शोभा की बातें सुनकर अजित (उसका पति) उसपर सनातन ढंग से दबाव डालना चाहता है, पर स्तत्व की बुनियादी रक्षा के लिए वह दाम्पत्य रिश्तों को तोड़ कर आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो जाती है। वास्तव में भारतीय समाज में परम्परावादी पुरुषों और नवचेतनावादी स्त्रियों के बीच यह खींचातानी युगों से चली आ रही है, किन्तु आज नारी को कई स्थानों पर उचित सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। प्रगतिवादी पुरुषों ने उनके उचित सम्बन्धों को लेकर नवीन विचार धारा का समर्थन दिया है।"1–

मन्नू भंडारी का दूसरा नाटक "महाभोज " उनके ही उपन्यास का नाट्यान्तर है। महाभोज राजनीतिक परिवेश को रुपापित करता है। आज के राजनीतिक वातावरण का कच्चा चिट्ठा है। महाभोज के विशेष आलोचक डॉ. आदित्य प्रसाद त्रिपाठी जी ने परिवेश की सच्चाई पर प्रकाश डालते हुए लिखा ह।– "परिवेश की सच्चाई का जो भी चित्रण हुआ है,उसकी असलियत से इन्कार करना कठिन है।–2 "

महाभोज के पात्र शहर–गॉंव,अतिप्रतिष्ठित –साधारण ग्रामीण , बलवान–कमजोर ,राजनीतिज्ञ–नौकरीपेशा ,हर वर्ग से सम्बन्धित है। वे अपने–अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने–अपने वर्ग की विशेषताओं से विभूषित है।

गॉंव के मनुष्यों में मुख्य विसू ,विसू के पिता, बिन्दा हैं। जो अपने वर्ग की परेशानियों को दूर करना चाहते हैं। बिन्दा ,विसू पढ़े लिखे हैं, वे श्रमजीवी वर्ग की परेशानियों को दूर करना चाहते हैं। जिसके प्रतिफल में बिसू को जान देना पड़ता है तथा बिन्दा को जेल मिलती है। बिसू के पिता को फूलों की माला पहनाकर अति सम्मानित किया जाता है तथा इस प्रकार राजनेता उनके दु:ख में स्वयं को सम्मिलित करते हैं। गांव की सरल जनता सब कुछ समझती है,किन्तु कोई बोल नहीं सकता क्योंकि शोषण के खिलाफ बोलने वाले बिन्दा का परिणाम सभी ने देख लिया है। उसी गांव में जोरावर जैसे शक्तिमान जमींदार हैं जो हर काम लाठी के जोर पर करा सकता है। उसकी पहुॅंच बड़े–बड़े मंत्रियों तक है। सकुल बाबू तथा दा साहब जैसे राजनीतिज्ञ भी है जो हर परिस्थिति को अपने अनुरुप कर लेते हैं। कभी भी कोई चाल उलटी पड़ ही नहीं सकती । सक्सेना जी जैसे एस.पी. भी हैं जो सच्चाई से अपना कार्य करते हैं पर उन्हें प्रोत्साहन के फलस्वरूप स्थानान्तरण मिलता है । दत्ता बाबू पत्रकार है,जो पेपर का

1– साठोत्तरी हिन्दी नाटक – स, विजयकांत दूबे पृ0 62

2– महाभोज सृजन और समीक्षा – डॉ, जगन्नाथ चौधरी पृ0 40

कोटा मिलने के लालच में अपने अखबार में कुछ भी लिखने को तैयार है। अपने पहले की लिखी खबर को भी गलत साबित कर देते हैं। हर पात्र प्रतिनिधि चरित्र है। ऐसे चरित्र हर जगह विद्यमान हैं।

नारी पात्रों में मुख्य रूप से दा साहब की पत्नी तथा बिन्दा की पत्नी हैं। दा साहब की पत्नी एक भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी दृष्टि में उनका पति ही सर्वस्व है। वह सही है या गलत, यह सोचना उनका कार्य नहीं है। वे हर पल अपने पति को सहयोग करती हैं। बिन्दा की पत्नी रुम्मा एक जागरुक महिला है। वह बिस्सू को भाई जैसा स्नेह करती है। सब कुछ समझती है। पर बिस्सू की हत्या के बाद अपने पति को इस झगड़े में पड़ने से मना करती हैं। वह डरती है कहीं उसके पति को भी कुछ न हो जाय। उसका चरित्र बिलकुल सरल है छल प्रपंच उसे छू भी नहीं गया है। साधारण होते हुए भी विशिष्ट है उसका चरित्र ।

विमला रैना के नाट्य संग्रह "आहें और मुस्कान" में विविधरंगी नाटक संग्रहित है। यथा – सामाजिक ,ऐतिहासिक ,हास्य व्यंग्य से परिपूर्ण नाटक । उनके नाटकों के अनुरुप ही उनके पात्र हैं। इन नाटकों के पात्र सामान्य हैं, जिनके साथ हम तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। क्योंकि हमारे बीच के हैं। आहें और मुस्कान के पात्र मध्यमवर्गीय हैं। वे भाई,बेटे,पिता,पति, प्रेमी सभी रूप में हैं। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से बँधे हुए हैं। पुरुष पात्र में कमलेश्वर ,डॉ. कुमार ,प्रकाश ,राकेश, प्रदीप राजू , हीरा ,कपिल,संदीप, सोम,राजेश ,रौवी,नरेन्द्र,रानू,सुनील,वीर,वाबा हैं। कमलेश्वर सुन्दर अच्छे परिवार का पुरुष है पर मानसिक रुप से बीमार है। उन्मादित रूप में वह अपनी पत्नी सुमित्रा के साथ दुर्ब्यवहार करता पर बाद में उसे दु:ख होता है। डॉ. कुमार मानसिक चिकित्सालय के डॉ. है तथा कमलेश्वर के चिकित्सक है। कमलेश्वर की पत्नी सुमित्रा को शादी के पहले प्यार करते थे। वे अपने कर्तब्य के प्रति पूर्णतः सचेत हैं किन्तु उनपर अन्य लोग लांछन लगाते है क्योंकि उन्होंने जहर देकर कमलेश्वर को मार डाला। जबकि कमलेश्वर ने खुद ही नींद की गोलियाँ खा ली। डॉ. कुमार का चरित्र अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक चिकित्सक है न कि एक प्रेमी का है। "जाको राखे साइयाँ" का प्रकाश अपनी बहन रश्मि से बेहद प्यार करता है। प्यार के कारण ही अपनी बहन की शादी आर्मी आफिसर राकेश से न करके हीरा से करता है जबकि रश्मि राकेश से प्यार करती है। किन्तु एक्सीडेन्ट में हीरा की मृत्यु उसे अन्दर तक झकझोर जाती जिससे उसे ज्ञात होता है कि

जिसकी रक्षा ईश्वर करता है उसे कुछ भी नहीं हो सकता। प्रकाश का चरित्र एक सामान्य व्यक्ति का चरित्र है क्योंकि कोई भी ऐसा ही सोचेगा। इसी प्रकार इस नाट्य संग्रह के अन्य पात्र किशन कैलाश,आशीष ,कपिल आदि भी जीते जागते पात्र हैं।

विमला रैना के नारी पात्र भी जागरूक पात्र हैं। सुमित्रा व रश्मि जैसे पात्रों के साथ ही 'बी. ए. बीबियॉ' की मिसिज चोपड़ा शर्मा ,"बिखरे बन्धन" की रीता भी है। सुमित्रा पागल के साथ धोखे से हुयी शादी से भी संतुष्ट है। रश्मि राकेश से प्यार करती है पर भाई व मॉ की इच्छा के अनुसार हीरा से ब्याह करके वैधव्य को झेल रही है। मिसिज शर्मा , चोपड़ा आदि घर की जिम्मेदारियों को छोड़कर समाज सेवा में व्यस्त हैं। उन्हें फैसन व बाहरी किया कलापों से ही फुर्सत नहीं है। रीता अपना हॅसता खेलता परिवार अपने अहं के लिए बर्बाद करती है,पर अपने मासूम बच्चों के कारण उसे अपनी गलती का अहसास होता है। और ' अजीजन' जैसी बहादुर नारी का भी चित्रण विमला रैना ने कियाहै जिसके पकड़वाने के लिए विदेशी सरकार ने इनाम रखा है। फिर भी वह अपने वतन की स्वतंत्रता के लिए गॉव–गॉव रोटी व कमल का फूल लेकर घूमती है। मधु जैसी सुशील भारतीय नारी का भी चित्रण किया है, जो अपने सुनील की तरह स्वप्न नहीं देखती । यथार्थ के धरातल पर अपनी जिन्दगी अपनी मेहनत से सुधारना चाहती है। और सुनैना जैसी नारी भी विमला रैना की कलम की नजर से नहीं बच पायी है जो धन दौलत के लिए अपनी बच्ची,पति को छोड़कर आरती का बसा–बसाया घर उजाड़ देती है। सब कुछ प्राप्त हो जाने पर उस पुरुष को भी कुछ नहीं समझती जिसके लिए दो घरों के सुख को नष्ट किया। विमला रैना के पुरुष व नारी चरित्र अनेक रूप के हैं।

शान्ति मेहरोत्रा कृत "ठहरा हुआ पानी" एक प्रतीक नाटक है। सामान्यतः प्रतीक ऐसी अभिव्यक्ति है जो अपने कथ्य से अधिक व्यंजित करती है। प्रस्तुत नाटक एक सामान्य परिवार की कहानी है जिसमें पति,पत्नी ,दो लड़कियॉ व एक लड़का है। घर का माहौल अत्यन्त कठोर है। पिता के कठोर अनुसाशन के कारण बच्चे कुंठित हैं। पिता अपनी लड़कियों की शादी करने में असमर्थ है उसके दकियानूसी व पुरातन विचारों में यह अनिवार्य नहीं है। बड़ी लड़की सीता 35 वर्ष की अवस्था में अलग रहने का निर्णय लेती है जो पिता के लिए आश्चर्यजनक है। सीता के घर किसी पड़ोसी को देखकर उसके चरित्र पर संदेह करते है। पिता का चरित्र लिजलिजा ढीला व स्वार्थपूर्ण है। पुरुष चरित्र में भाई है जो बेरोजगार व कुंठित व्यक्तित्त्व का स्वामी है, जिसका कोई भविष्य नहीं हैं।वह पूरी तरह हताश है । नारी चरित्रों में मॉ ,सीता व

रमा है। सीता एक सुलझी हुयी समझदार महिला है। सब कुछ सहन करते हुए घर के दायित्वों को पूरा करती है। पर उसकी सहन शक्ति की सीमा है। वह अपने जीवन का निर्णय लेती है। उसका चरित्र एक आदर्श समझदार महिला का है। वह जागरूक नारी है। ऐसी महिलाओं की संख्या अत्यधिक है घर की जिम्मेदारियों के नीचे अपने भविष्य को स्वाहा कर देती है। वह अपने वर्ग की नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। छोटी बहन रमा वेहद चालाक व स्वार्थी प्रवृत्ति की है। वह नित्य नये प्रेमी बदलती है। एक आदमी के साथ अपने प्रेम का नाटक खेल रही है जिसकी पत्नी कैन्सरग्रस्त है। वह उसकी पत्नी के मरने का इंतजार करती है। वह अति आधुनिक विदेशी प्रभाव से ग्रस्त महिला वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है भारतीयता जिसे छू तक नहीं गयी है। ठहरा हुआ पानी में सीता का चरित्र हृदयस्पर्शी है। उसकी वेदना दर्शक को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती।

'एक और दिन ' शांति मेहरोत्रा के नाटकों का संग्रह है। 'सर्पदंश' की रीता सांप के काटने पर इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में जाती है। वहॉं जो दंश लगते हैं वे सर्पदंश से भी भयंकर हैं। 'किसी का इंतजार नहीं में तीन–तीन बेटों के होने पर भी मॉं पिता अनाथ जैसे रहते हैं उन्हें किसी का इंतजार नहीं है क्योंकि कोई ध्यान रखनेवाला, आनेवाला नहीं है।'एक थी मौसी' की मौसी साधारण मौसी जैसी नहीं है वे अति विशिष्ट हैं। दूर के रिश्ते की होते हुए भी राजेश के घर रहती हैं तथा उसको अपमानित करके व पैसों की हेराफेरी करके चुपचाप खिसक लेती है। 'अपने–अपने दायरे' में स्वीटी अत्यन्त स्वतंत्र विचारों की युवती है उसके ढेरों पुरुष मित्र घर आते है। दादा,दादी को लगता है कि इस लड़के से शादी हो सकती है पर स्वीटी के सपने में तो आनन्द है जिसकी भनक भी दादा दादी को नहीं है। 'आतंक' में कमला की सास व उसका पति मिलकर उसकी हत्या कर देते हैं। उन्हें केवल डर है कि कुछ हो न । इस बात का कोई असर नहीं, कोई डर नहीं कि उन्होने क्या किया है। 'तीसरा हिस्सा' में चोर व शाह तो एक रास्ते के राही हैं पर पुलिस को भी उसमें हिस्सा चाहिए–तीसरा हिस्सा । 'एक और दिन 'में स्त्री एक दिन अपने ढ़ग से जीना चाहती है, पर वह भी सम्भव नहीं। सभी नाटकों के कथ्य अलग–अलग हैं पर सभी में कहीं पैना व्यंग्य है या सामाजिक विसंगतियों पर एक प्रश्न चिन्ह। मेहरोत्रा जी ने कथ्य के अनुकूल ही चरित्र सृष्टि की है।उनके पात्र मध्यमवर्गीय हैं। वे मध्यमवर्गीय खूबियों व कमियों के साथ हैं। पर चरित्र चित्रण सफलतापूर्वक किया है। 'कुंथा जैन' रचित 'वर्धमान रुपायन' एक नृत्य नाटक है। प्रस्तुत नाटक महावीर जी के जन्म

से सम्बन्धित है। प्रस्तुत नाटक धर्म से प्रभावित है। डॉ0 सिद्धनाथ कुमार पद्य नाटक के विषय में अपना मत व्यक्त किया है—"हिन्दी पद्य नाटक का सर्वेक्षण सूचित करता है कि कई महत्वपूर्ण रचनाओं के बावजूद वह हिन्दी नाटक की मुख्य धारा नहीं बन सका। कुछ नाटकों को प्रसारण एवं प्रदर्शन की दृष्टि से सफलता भी मिली है लेकिन उसकी कोई सुदृढ़ परम्परा नहीं बन पायी है। लगता है पद्य नाटक ने रंग मंच के काव्य को स्वीकार करने वाले गद्य नाटकों के रुप में अपनी दिशा ही बदल ली है। कोई प्रतिभा इसे पुनः छंदोबद्धता की दिशा में ले जा सकती है, इसमें संदेह नहीं। यह सही है कि उत्कृष्ट एवं शक्तिशाली हिन्दी पद्य नाटक बड़ी संख्या में नहीं लिखे गये हैं लेकिन उपलब्धियों की हमेशा सीमा होती है, सम्भावनाओं की कोई सीमा नहीं होती ।"—1

शीला भाटिया रचित "दर्द आयेगा दबे पॉव" फैज अहमद फैज की जीवन तथा शायरी को कथ्य बनाकर लिखा गया एक संगीत नाटक है। शायर की जिन्दगी के महत्वपूर्ण पक्षों को ले कर जीवन के हर रंग का समावेश किया है।नाटक में मुख्य चरित्र शायर का ही है। कुछ कल्पना कुछ सच्चाई का समावेश करके लेखिका ने शायर के चरित्र को यथाशक्य उभारा है। नाटक बहुत ही प्रभावी व रुचिकर बन पड़ा है।

डॉ0 कुसुम कुमार कृत 'ओम कांति–कांति' बहुचर्चित नाटक है प्रस्तुत नाटक में मिसिज दानी व बुखारी अतिविशिष्ट वर्ग की प्रतिनिधि हैं। वे टीचर्स के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं जो पढ़ाने के अलावा सब कुछ कर सकता है। उन्हें विद्यार्थियों के भविष्य से कुछ लेना–देना नहीं। न तो उन्हें कुछ आता है न तो मेहनत करके पढाना चाहती हैं। मिसिज पंत व मिस सिंह जो कर्तव्यों को जानती हैं। उनका मजाक बनाती हैं। लड़कियॉ उनकी इज्जत करती हैं तो भी मिसिज दानी को अच्छा नहीं लगता है। विद्यार्थियों के कैरियर की उन्हें चिन्ता नहीं हैं।जो विद्यार्थी पढ़ना चाहते हैं उनसे उन्हें शिकायत है। उनकी शिकायत वे प्रिंसिपल से करती हैं। प्रिंसिपल भी छात्राओं की परेशानियों को न समझकर मिसिज दानी का साथ देती है। मेनका जैसी होनहार छात्रा का भविष्य इनके कारण धूमिल पड़ जाता है। क्लासरुम की कांतियों की उपज का कारण मिसिज दानी जैसी अध्यापिकाऐं ही हैं। 'रावणलीला' में कुसुम जी ने रावण को मुख्य पात्र बनाकर हास्य एवं व्यंग से भरपूर नाटक की रचना की है।प्रस्तुत नाटक नौटंकी शैली में लिखा गया हैं । कुसुम जी ने रावण लीला की

1— हिन्दी नाटक के सौ वर्ष — तिवारी एवं रावत पृ0 101

चरित्र सृष्टि बहुत ही रुचिकर की है। पुरुष पात्र ही महिला पात्रों का अभिनय करते हैं। सारा क्रिया व्यापार स्टेज पर होता है। रावण पैसे लेकर जिद से पैसे बढ़वाकर अभिनय करता है। उसे अभिनय के समय पीने के लिये शराब चाहिए। अगर संयोजक पैसे नहीं बढायेगा तो रावण अंगद का पैर ऊंन्चा उठा देगा । वह शिव धनुष तोड़ देगा। रावण का चरित्र रामायण कालीन रावण की गरिमा से युक्त न हो कर आज की परिस्थितियों के अनुकूल है। अन्य पात्रों का चरित्र चित्रण भी प्रसंगानुकूल है। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' कुसुम कुमार कृत प्रसिद्ध नाटक है। एक बूढ़ा रिटायर्ड मनुष्य अपनी पैन्सन पाने के लिए पचासों धक्के खाता है। घर की परेशानियों को देखकर इकलौती बेटी नीति आत्महत्या कर लेती है, माधोसिंह भी थक हार कर बैठ जाते हैं। उनके सभी प्रयास निष्फल हो जाते हैं वे स्वयं भी स्वर्ग सिधार जाते हैं। उसके पश्चात उनकी पत्नी को रजिस्ट्री मिलती है कि उनके पेपर की सारी गल्तियां दूर हो गयी हैं। एक थके हारे बेसहारा बुजुर्ग के जीवन की सच्ची घटना को प्रस्तुत करता है यह नाटक । धीरे–धीरे उनकी वेदना में दर्शक डूब जाते हैं माधोसिंह का चरित्र सर्वत्र छा जाता है। माधोसिह इतने लाचार इंसान हैं, कि अपनी बीमार बेटी का इलाज भी नहीं कर सकते। उनके मकानमालिक मगन मस्त मौला इंसान हैं। मगनपूरे परिवार का ध्यान रखते हैं। वे सरल मन के सच्चे इंसान हैं नारी पात्रों में माधोसिंह की पत्नी कमला व पुत्री नीति ही महत्वपूर्ण है। कमला अपने पति व पुत्री की खुशी में खुश रहने वाली भारतीय नारी हैं। नीति परित्यक्ता है। इस दुःख से वह मानसिक रुप से बीमार है। अपने पिता की परेशानी का सबसे बड़ा कारण नीति है। वे उसके दुःख में दुःखी हैं।नीति व कमला का चरित्र माधेसिंह के चरित्र को पूर्णतः उभारने के लिए महत्वपूर्ण है।माधेसिंह प्रतिनिधि चरित्र है।सरकारी तंत्र की गल्तियों के कारण माधोसिंह जैसा अंत सम्भव है। माधोसिंह का चरित्र अत्यन्त उदात्त है। मानवीय विशिष्टताओं से भरपूर है।

'पवन चतुर्वेदी की डायरी' कुसुम कुमार कृत ऐसे व्यक्ति के जीवन को कथ्य बनाकर लिखा गया नाटक है जो जीवन से हताश, निराश हैं उसे जीवन में किसी ने स्वीकार नहीं किया। पिता प्रतिष्ठित ख्याति प्राप्त डॉ0 हैं। वे चाहते थे कि पवन भी डॉ0 बनें पर पवन को हीरो बनना था। कुछ साल अभिनय करके कैरियर भी नष्ट कर लेता है। उसके बाद कहीं भी स्थिर नहीं हो पाता। शादी करके घर बसाता है। दो बच्चे तथा दस साल साथ रहकर भी पति– पत्नी अलग हो जाते हैं। बहन पास के शहर में रहती है पर सम्बन्ध नहीं है।

पिता उसी शहर में रहते हैं पर आना जाना नहीं है। माँ अपने बेटे के लिए तरसती ही स्वर्ग सिधार गयीं। पिता स्वयं ही मिलने के लिए आते हैं। हर गलत बात के लिए सचेत करते हैं। पर पवन चलता अपनी राह है। अंत में मेहता के विषय में भी बताते हैं पर पवन पिता की बातें न मानकर मेहता पर विश्वास करता है, और समस्त जमा पूँजी गवां कर धोखा खाता है। पत्नी दूर रह कर भी पैसे के लिए परेशान करती है, तथा पत्रों में भी गालियां लिखती है। पवन ने किसी की न सुनी न किसी से बना कर रह सका। पवन का चरित्र जीवन से थके हारे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है पिता की मृत्यु के पश्चात् जब रास्ते में शव ले जाने वाले लोग उसे पहचान लेते हैं तो ज्ञात होता है कि यह शव उसके अपने पिता का है। पवन जैसे लोग अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण सारी सुख सुविधाओं के होते हुए भी अपनी कोई जगह नहीं बना पाते वे किसी को भी स्वीकार नहीं होते। प्रस्तुत नाटक पवन की मानसिक उथल–पुथल को स्पष्ट करने में सक्षम है। " संस्कार को नमस्कार " कुसुम कुमार का सामाजिक नाटक है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में आज के राजनैतिक माहौल को कथ्य के लिए चुना है। पुरुष पात्रों में मुख्य पात्र संस्कार चंद है जो नेता है। उनका चरित्र अत्यन्त निम्न कोटि का है। वे पशु सदृश है। एक महिला आश्रम में निरीक्षण के लिए आते है। सारे सुखों का उपयोग करना उनका अधिकार है। कमोबेन आश्रम की सुपरवाइजर है। अधिकतर पात्र महिलायें हैं जो समाज से थकी –हारी किसी मुसीबत की मारी है, इसलिए अनाथ आश्रम में शरण लेती हैं। किन्तु ये शरण स्थल भी इन लोगों के कारण अपवित्र हो जाते हैं। नारी केवल उपभोग की वस्तु है चाहे किसी रूप में मिले। ये पशु सदृश लोग माँ,बहन,बेटी व पत्नी की गरिमा नहीं समझते। संस्कार चन्द का चरित्र ही लिजलिजा व गंदा है। लेखिका ने संस्कार चन्द के चरित्र को बखूबी उभारा है। आज हमारे समाज में इन संस्कार चन्दों की कमी नहीं है। वे अपने वर्ग के प्रतिनिधि हैं।

"सुनो शेफाली " में ' कुसुम कुमार ' ने अन्तर्जातीय प्रेम–विवाह की समस्या को उठाया है। सामाजिक पारम्परिक रूढ़ धरणाओं के विरुद्ध समसामयिक चेतना का विद्रोह है। यह नाटक प्रतिक्रियावादी और जड़तापूर्ण स्थिति से ऊपर उठने की दृष्टि देता है ,इसके अन्तर्गत ब्राहमण कुमार व हरिजन कुमारी के प्रणय सम्बन्ध की कथा है जिसकी परिणति उसकी छोटी बहन के साथ विवाह में होती है। पुरुष चरित्र में बकुल ,मनन आचार्य और बकुल के पिता हैं। बकुल का चरित्र अवसरवादी , प्यार को भी अपने स्वार्थ के अनुसार प्रयुक्त करने वाले युवक का है। पिता के सारे गुण बकुल के भी है। बकुल के पिता समाजसेवी होने का ढोंग

करते हैं। सारी समाज सेवा चुनाव में वोट प्राप्त करने के लिए की जाती है। दोनों बाप–बेटे शेफाली को भी इसी तरह प्रयुक्त करना चाहते हैं। शादी करके उनकी समाज सेवा में एक गुण और जुड़ जायेगा कि ब्राह्मण होकर हरिजन युवती के साथ ब्याह किया। ब्याह के पहले ही सारी सामाजिक मर्यादाओं का उलंघन करते हैं। शेफाली के मना करने पर चुपचाप उसकी छोटी बहन किरन से ब्याह कर लेता है। मनन आचार्य का चरित्र उदात्त है। उन्हें शेफाली से स्नेह है। वे कोई ढोंग नहीं करते। जो कुछ है सबके सामने है। ज्योतिषी हैं पर धोखा नहीं देते। एक संत पुरुष सदृश आचरण है उनका। नारी चरित्रों में मुख्य चरित्र शेफाली है। बाकी नारी पात्रों के चरित्र विशेष उल्लेखनीय नहीं है। शेफाली पढ़ी–लिखी भोली भाली युवती है। बकुल को देर से समझ पाती है। उसे फिर भी खुशी है कि वह बाप–बेटे की चाल में नहीं फंसी , पर बहन से बकुल की शादी देखकर हतप्रस्थ हो जाती है। क्योंकि सभी ने – उसके अपने माँ,बाबा,बहन–उसे छला है। उस बकुल ने जिसके साथ तीन साल से जुड़ी है। उसका मन बहुत आहत होता है। मिस साहब व मनन दादा ही उसको समझ सकते हैं। वह अपना गलत इस्तेमाल होने देना नहीं चाहती। अपना सर्वस्व खोकर भी वह संतुष्ट है। शेफाली परिस्थितियों से न डरने वाली बहादुर लड़की है। उसे अपनी जाति को लेकर भी कोई हीन भावना नहीं है। इस तरह हम देखते हैं कि शेफाली का चरित्र भावना प्रधान ,बुद्धिजीवी बर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। डॉ. कुसुम कुमार ने अपने सभी नाटकों की चरित्र सृष्टि में सफलता प्राप्त की है।

मृदुला गर्ग के नाटकों की चरित्र सृष्टि महत्वपूर्ण है। ' एक और अजनबी' प्रसिद्ध असंगत नाटक है। स्त्री पुरुष के रागात्मक सम्बन्धों का अनेक पक्षीय उद्घाटन है ।प्रस्तुत नाटक में मुख्य पुरुष पात्र इंदर और जगमोहन है। तथा नारी पात्र शानी है। शानी स्वतंत्र विचारों वाली युवती है। चूँकि उसका प्रेमी इन्दर उससे अधिक महत्व अपने कैरियर को देता है,अमेरिका चला जाता है। इसलिए वह जगमोहन से विवाह कर लेती है। पर अपने पति को भी आदर नहीं दे पाती। शानी का पति कमजोर ,आत्मविश्वासहीन,चापलूस व्यक्ति है,जो अपनी पदोन्नति के लिए शानी को माध्यम बनाता है। आत्म सम्मान से आहत शानी का क्रोध फूट पड़ता है–

" अगर मैं कहूँ मुझे इस जिन्दगी से नफरत है। मैं नहीं चाहती, यह गरम सासों से भरे कमरों में बन्द जिन्दगी। सिफारिशों से पायी होनहारी और सिफारिशों के बल पर होती तरक्की। –1 शानी का चरित्र अति आधुनिक है जो भारतीय नारी के चरित्र से मेल नही खाता। शादी के बाद भी वह अपने पति के प्रति वफादार नहीं है। उसके विपरीत उसकी सहेली मणि है जो बिल्कुल भारतीय है। चरित्रवान , शर्मिली सभी गुण हैं उसमें। इन्दर व जगमोहन का चरित्र भी शानी के चरित्र जैसा है जीवन मूल्य है ही नहीं। लेखिका ने इसके समनान्तर एक और जोड़े के प्यार को दिखाया है। जो पति पत्नी नहीं हैं कुछ साल साथ रहते फिर अलग हो जाते हैं। जैसे चिड़िया घोसला बदलती है उसी तरह। लेखिका ने स्त्री पुरुष सम्बन्धों को अलग नजर से देखा है।

'तुम लौट आओ' मृदुला गर्ग रचित पति पत्नी सम्बन्धों को लेकर लिखा गया दूसरा नाटक है। स्त्री के गर्भ धारण की इच्छा को कथ्य बनाया है। महेन्द्र मीता का पति है वह चाहता है कि मीता अबार्शन करवा ले। क्योंकि बच्चा उसके अमेरिका जाने के मार्ग में बाधक हैं मीता की माँ भी उसे वैसी सलाह देती है। सारी परेशानियों के बीच मीता का चरित्र और उभरता है। वह महेन्द्र की इच्छाओं की अवहेलना करती हुई कहती है–'यह मेरा निजी मामला है।' महेन्द्र तिलमिला जाता है। उसके निर्णय का ससुर व बूआ जी स्वागत करते हैं। पुरुष पात्रों में ससुर, पिता,भाई, देवर व पति महेन्द्र हैं पर मुख्य चरित्र महेन्द्र का ही है। महेन्द्र सुलझा हुआ इंसान है , पर अमेरिका जाने की सनक ने उसे जिद्दी बना दिया है। वह सभी की इच्छाओं की परवाह नहीं करता और मीता को भी उसके निर्णय के साथ छोड़ कर जाने की तैयारी करता है। किन्तु वह अपने बच्चे व मीता के लिए वापस आ जाता है, जाता ही नहीं। उसके इस निर्णय ने उसके चरित्र को विशिष्ट बना दिया है।आज नवयुवकों में अमेरिका की चकाचौंध भरी जिन्दगी के प्रति अत्यधिक मोह है। और महेन्द्र इस चक्रव्यूह से बाहर निकल कर अति विशिष्ट हो जाता है। मीता का चरित्र स्वाभिमानी , अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक नारी का है। वह आधुनिक होते हुए भी अपने संस्कार से जुड़ी है, लगाव रखती है।

मृदुला गर्ग रचित 'जादू का कालीन' कालीन कारखाने मेंकाम करने वाले बच्चों के जीवन को कथ्य बना कर लिखा गया मनोवैज्ञानिक नाटक है। मृदुला गर्ग नं इन छोटे–छोटे बच्चों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। गाँव से गरीब लाचार माँ–बाप अपने छोटे बच्चों

1– एक और अजनबी – मृदुला गर्ग पृ0 44

को दलाल के साथ काम सीखने के लिए भेजते हैं। यहॉ कालीन कारखाने में उससे ज्यादा काम करवाते हैं, खाना भी ठीक से नहीं देते। उनकी पतली ऊॅगलियॉ कट जाती हैं,फिर वे लचक खो देती हैं। और वे बच्चे कारखाने के लिए बेकार हो जाते हैं। समाजसेवक हैं जोबच्चों को मुक्त करवाते हैं। पर उन्हें रोजी रोटी के लिए क्या करना चाहिए यह कोई नही सोचता । मृदुला जी ने बच्चों के चरित्र के साथ–साथ सरकारी तंत्र के लोगों के चित्रण में भी स्वाभाविकता का निर्वाह किया है। मृदुला जी ने अपने नाटकों के चरित्र पर विशेष ध्यान दिया है।

डॉ0 सरोज बिसारिया के नाटक 'अकथ कहानी प्रेम की' तथा 'नगरेषु कांची ' ऐतिहासिक नाटक हैं। दोनों नाटकों के कथ्य इतिहास से लिए गये हैं। दोनो नाटकों के माध्यम से लेखिका ने देश के गौरव का वर्णन किया है।महाराज कामसेन व महाराज महेन्द्र दोनों अपने देश का गौरव बढ़ाना चाहते हैं। महाराज कामसेन को गीत संगीत से लगाव नहीं है पर उसका भ्रम टूटता है। कलाकारों से देश की शोभा बढ़ती है। महाराज महेन्द्र तो कॉची का गौरव ही शिवकामी व शिल्पी आयनर को मानते हैं। नाटकों की नायिकायें शिवकामी, कामकन्दला नृत्य प्रवीणा हैं। सरल स्वभाव ,सुन्दरता में रति तथा अपने नृत्य में शिवानी जैसी है। कुमार व माधव शूरवीर हैं। माधव ब्राहमण है संगीत विशेषज्ञ है। नायक के गुणों से विभूषित हैं। शिवकामी को कॉची के गौरव के लिए मानवीय संवेदनाओं को होम कर देवी की श्रेणी में आना पड़ा। कामकन्दला भी देवदासी बन कर महाकाल को अपना जीवन अर्पित कर देती है।दोनो का प्रेम पूर्णता को प्राप्त करना चाहता था पर देश के गौरव के लिए त्यागना पड़ा। डॉ0 बिसारिया अपने पात्रों के चित्रण में काफी सतर्कता बरती हैं। उनके सभी पात्र सबल चरित्र के हैं। सभी में मानवीय अच्छाइयॉ तथा देश प्रेम कूट–कूट कर भरा है।

' रेशमी रुमाल ' त्रिपुरारी शर्मा का प्रतीक नाटक है। रेशमी रुमाल में मुख्य चरित्र सुलक्षणा का है। वह एक मध्यम वर्गीय परिवार की बहू है। उसका पति कहीं दूर रहता है। चार छः साल में आता है। घर में मामी है, विधवा फूफी हैं, कभी–कभी आने वाली ननद है एक नव ब्याहता देवरानी है तथा उसकी बेटी मीनू है। भरा पूरा परिवार है। वह पूरी तरह व्यस्त है। पर होली गाने वाले आते हैं उसका पति भी आया हुआ है। वह गाने वालों के साथ नाचती है फिर घर से चली जाती है उसका देवर जबर्दस्ती उसे घर लाता है। तंग घरों में औरतों की जिन्दगी कितनी सिमटी होती है। वे मॉ, भाभी , पत्नी होकर सारेदायित्वों को निभाती है। और अपनी

आन्तरिक संवेदनाओं को सुलाये रखती हैं। इतने सालों तक सब कुछ सहन करने के बाद सुलक्षणा में यह परिवर्तन कैसे आया। इस परिवर्तन को कोई स्वीकार नहीं कर पाता। प्रताप अपने छोटे भाई रोहित को समझाता है कि बुत नहीं बनाने चाहिए। क्यों कि बुतों के टूटने से बहुत दुःख होता है। सुलक्षणा का चरित्र सुलझा हुआ था। पर उसमें आया परिवर्तन हतप्रम करने वाला है। त्रिपुरारी जी ने नारी मन के कोमल तथा कोमलतम् पहलू को छूआ है। वह भी इन्सान है। वह स्वेच्छा से कदम उठा सकती है। परिणाम क्या होगा उसे सहन करने का धीरज भी उसे अपने में लाना होगा। सुलक्षणा का चरित्र अनूठा है। वह महिलाओं के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो पर्दे में रहती हैं। बाहर रह कर उनके बारे में कल्पनाऐं की जा सकती हैं पर उनके घुटन का एहसास ,उनकी समस्याओं को महसूस नहीं किया जा सकता।

' आप न बदलेंगे ' ममता कालिया का एकांकी संग्रह है। इसमें पॉच एकांकी संग्रहित हैं। आप की छोटी लड़की, आत्मा अठन्नी का नाम है, आप न बदलेंगे, यहॉ रोना मना है, जानसे प्यारे।'आप की छोटी लड़की ' में मुख्य भूमिका तूर्णा की है। जो बहुत होनहार , समझदार लड़की है। घर के सारे काम दौड़ कर करती है मम्मी तथा बड़ी बहन की डांट खाती है। पिता समझते हैं , पर तारीफ बड़ी की करते हैं।'आत्मा अठन्नी का नाम है' में दहेज से प्रताड़ित युवती वन्दना की मुख्य भूमिका है। ढेरों दहेज लाने के बाद भी उसे सास ससुर व पति परेशान करते हैं। ' आप न बदलेगे ' में पति– पत्नी व बच्चे है। पत्नी मीता अपने बच्चों व अपने पति के व्यवहार से परेशान है। 'यहॉ रोना मना है ' में कालिंदी की मॉ की मृत्यु पर भी उसे ससुराल में रोने की इजाजत नहीं है क्योंकि देवर की शादी है। 'जान स प्यारे में ' डॉ0 कौशिक ने ऐसी दवा की खोज की है जो मृत व्यक्तियों को जिन्दा कर सकती है।

ममता कालिया के सभी पात्र हमारे अपने समाज के हैं, जीवंत हैं। तूर्णा में बहुत सम्भावनाऐं हैं पर मॉ पिता समझ नहीं पाते। आत्मा अठन्नी की वन्दना में सारे गुण हैं पर दहेज की कमी के कारण घर में सम्मान नहीं मिलता। आप न बदलेंगे में मीता के घर में सब कुछ ठीक है पर वह अपने हिसाब से चाहती है। जिन्न कहता है आप जो चाहती हैं वह सम्भव नहीं है कोई नहीं बदल सकता। यहॉ रोना मना है, कालिन्दी के परिवार में सभी अच्छे हैं पर बहू को दबा कर रखना चाहिए ,इसलिए परेशान करते हैं। मानसिक पीड़ा व पारिवारिक विसंगति ही कालिंदी के चरित्र का महत्वपूर्ण पक्ष है। जान से प्यारे में समाज पर तीखा व्यंग्य है, जो जिन्दा

रहते जान से प्यारे थे, वे ही मरने पर कुछ भी महत्व नहीं रखते।सभी एकांकी की चरित्र सृष्टि महत्वपूर्ण हैं

' आदमी जो मछुआरा नही था' मृणाल पान्डेय का प्रतीक नाटक है। मृणाल पान्डेय के इस नाटक की चरित्र सृष्टि बहुत महत्वपूर्ण हैं। पुरुष चरित्र में पिता, दद्दा,मिश्रा जी व नन्द दुलारे हैं। इनकी भूमिकाऐं संक्षिप्त हैं पर चारित्रिक पक्ष महत्वपूर्ण है। मुख्य पात्र नन्द दुलारे हैं। वह सीधे साधे उच्च शिक्षा प्राप्त इंसान हैं। घर की जिम्मेदारियों को समझते हैं। दादा, मॉ, पिता , पत्नी दो बच्चों का भरा पूरा परिवार है। वरदान में पाये गये पद को स्वीकार तो कर लेते हैं। पर स्वजनों व लोगों के कहने पर उन्हें बार बार वरदान मॉगना पडता है। उन्हें मिलता है जो कि वह नहीं चाहते थे। वे पूरी तरह दलदल में घिर जाते हैं जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है। सभी की अपेक्षाऐं बढ़ जाती हैं। किसी को ट्रांसफर चाहिए , किसी को प्रमोशन। निजी सलाहकार बनकर वह अपनो से दूर होते गये। अपने बुजुर्गों के लिए समय नहीं ,घर बच्चों के लिए समय नहीं है। नन्द दुलारे का एक के बाद सब कुछ छिनता गया। घर की शान्ति, मन की शान्ति,बेटा–बेटी,पत्नी भी पागल हो गयी। देश के लिए सब कुछ किया किन्तु उस पर इन्क्वायरी कमेटी बैठ गयी। नन्द दुलारे का व्यक्तित्व बौना हो गया। वरदान हमेशा प्रतिदान मॉगता है। पत्नी हमेशा पति को सहयोग देती थी ,वह भी बेटे की मृत्यु के आघात से पागल हो गयी। बेटी ममता जो नन्द दुलारे को सबसे अच्छी तरह समझती है । वह मना करना चाहती है पर वह कुछ नहीं कर पाती। प्रस्तुत नाटक मानसिक त्रासदी को कथ्य बनाकर लिखा गया है। नन्द दुलारे की मानसिक त्रासदी दर्शकों के हृदय को छूने में समर्थ है।

मृणाल पान्डेय का नाटक 'चोर निकल के भागा ' हास्य व व्यंग्य से भरपूर है। इस नाटक में ताजमहल की काल्पनिक चोरी को कथ्य बनाया गया है। गेन्दा लाल , शरीफा बी, रमेश , महेश,सुरेश, नीता, बाबा जी तथा स्मगलर बब्बर,बाण्ड सभी का चरित्र रुचिकर बन पड़ा है। मृणाल पान्डेय की कलम का ही कमाल है कि हर चरित्र मुख्य है, किसी को छोड़ा नहीं है। या कोई चरित्र कम महत्वपूर्ण नहीं है।

' असुरक्षित ' डॉ0 गिरीश रस्तोगी द्वारा रचित वर्तमान परिस्थितियों पर लिखा हुआ सामाजिक नाटक हैं। इसमें मुख्य पात्र दो हैं। पुरुष,स्त्री। पुरुष स्त्री दोनो ही कालेज में प्रोफेसर हैं। स्त्री नाटकों का निर्देशन भी करती है। दोनो पुस्तकें लिखते हैं। पुरुष इस व्यवस्था से हताश है,निराश है क्योंकि वे किसी की चाटुकारिता नहीं कर सकते। आज हर

जगह चापलूसी घूसखोरी है। स्त्री को पुरस्कार मिलने की घोषणा होती है। लिस्ट में उसका नाम होता है पर जब राशि मिलती है तो दूसरों को मिलती है। दोनो का चरित्र विशिष्ट है। अपने–अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

'नहुष' डॉ0 गिरीश रस्तोगी का मैथिली शरण गुप्त के काव्य पर आधारित नाटक है। इस नाटक का मुख्य पुरुष पात्र नहुष है। नहुष का चरित्र सर्वगुण सम्पन्न है। नहुष के चरित्र के चार रुप हैं। एक –नहुष का तेजस्वी, योगी, पराक्रमी रुप।दूसरा–इन्द्रलोक में देवत्व प्राप्त करने पर उसका मानवीय द्वन्द और पृथ्वी प्रजा को त्यागने का क्षोभ। तीसरा–उसका देवलोक का भोग विलास। चौथा– अपने प्रमाद में शापग्रस्त होकर पृथ्वी पर गिरना, तथा आत्म–विश्लेषण द्वारा जीवन सत्य को प्राप्त करना , और साथ ही एक विश्वव्यापी,उदात्त शाश्वत सत्य का सम्प्रेषण।

दूसरा मुख्य पात्र शची है जो आधुनिक नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व और आत्म विश्वास की पूर्ण अभिव्यक्ति है। गरिमा, संघर्ष, संकल्प, स्वाभिमान उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष हैं। जो मात्र इन्द्राणी–रुप के सांचे से मुक्त कर एक जीवन्त मनुष्य की गतिशीलता– सजीवता प्रदान करते हैं। अपने पति इन्द्र के वियोग में व्यथित शची मात्र विरहिणी नायिका नही है। वह बुद्धि , तर्क, विश्वास से युक्त है। नहुष के देवराज्ञी बनाने के प्रस्ताव पर उसका भड़कना केवल क्रोधाग्नि नहीं है, वह उसके गम्भीर हृदय की अर्न्तज्वाला है, जिसमें शक्ति और तेज है। चुनौती देने की प्रखरता है । 'नहुष' के दोनों पात्र अति विशिष्ट है।

'अपने हाथ बिकानी' डॉ. गिरीश रस्तोगी का सामाजिक नाटक है। नाटक की नायिका बिन्दु बुद्धिमान, सुन्दर,बोल्ड लड़की है। वह महिलाओं की समस्याओं पर शोध कर रही है। सभी के गुणों की तारीफ करने वाली सभी का सम्मान करने वाली है। वह शादी नहीं करना चाहती है। इसी प्वाइंट पर पापा से झड़प होती है और वह पापा के विषय में भी अन्य पुरुषों जैसा सोचती है। उसका चरित्र दोहरा नहीं है। लोगों को बताने के लिए भाषण देने के लिए कुछ और तथा अपनी निजी जिन्दगी में कुछ और। डॉ. रस्तोगी ने उसकी मानसिक वेदना को पूरी तरह स्पष्ट किया है। प्रवीण विन्दु का दोस्त है तथा यह परिचय बहुत जल्दी ही हुआ है। वह स्वतंत्र विचारों वाला जर्नलिस्ट है। नाटक करता है। दोनों एक दूसरे से प्रभावित है। पापा प्रवीण को लेकर उसके चरित्र पर लांछन लगााते है तो बिन्दु टूट जाती है। पापा जिन्होंने मॉ

बनकर उसका पालन पोषण किया वे ही ... उसे नहीं समझ सके। प्रवीण सरल मन का है। उसका चरित्र अति विशिष्ट है।डॉ. गिरीश रस्तोगी के नाटकों की चरित्र सृष्टि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

स्वरूप कुमारी बख्शी का एकांकी संग्रह ''मैं मायके चली जाउँगी'' हास्य एवं व्यंग्य से भरपूर है। स्वरूप कुमारी के सभी पात्र जीवंत हैं। सारी घटनाएँ हमारे सामने घटित हो रही है ऐसा पाठक महसूस करता है। सभी पात्र हँसी का खजाना बिखेरते हैं। वह कुमकुम ,टुनटुन , माला ,माताजी, कुसुम कली,रानी, शारदा, शान्ता सभी एक जैसी हैं।

'सावित्री रांका' रचित' ''एक और आवाज'' छ. एकांकी का संग्रह है। प्रतिशोध सम्राट अशोक के शासन काल की घटना है। सम्राट अशोक की छोटी रानी कुमार से प्यार करती है ,तिष्या कुमार से वैसी ही अपेक्षा रखती है। पर कुमार उन्हें माँ के समान इज्जत देते है। तिष्या कुमार से बदला लेने के लिए उनकी ऑखे निकलवा लेती है। तिष्या प्रेम की तथा प्रतिशोध की आग में जलती है। सम्राट ने बृद्धावस्था में तिष्यरक्षिता से शादी की तथा स्वयं बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। उसे सम्राट से बदला लेना है। तिष्या का चरित्र प्रतिशोध की आग में जलता है उसका अंत भी जिन्दा जला देने से होता है। प्रेम तो त्याग मॉगता है तिष्या के प्रेम का रूप अलग है। कुमार का चरित्र राजोचित है,वीरोचित है। '' कपिलवस्तु की राजवधू'' में यशोधरा के उदार चरित्र का वर्णन है। सिद्धार्थ उसे सोती अवस्था में छोड़कर जाते है। उस वीर नारी को बस दु:ख है तो इस बात का कि सिद्धार्थ ने उसे समझा नहीं। वे उनके पथ में बाधा नहीं बनती। पर जब वह बौद्ध बनकर वापस आते हैं तो इकलौते बेटे राहुल को पिता को सौपकर उत्तरदायित्व से मुक्ति पा लेती हैं।

हृदय परिवर्तन में सम्राट अशोक के उदात्त चरित्र का वर्णन है,कलिंग विजय के बाद उनका हृदय बदल जाता है। वे निर्णय लेते हैं कि वे कभी युद्ध नहीं करेगे। और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। ' सारथी ' में महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के रथ का सारथी बनना स्वीकार करते है। ' मुक्ति' और 'एक और आवाज' सामाजिक नाटक है। मुक्ति में गणेश का चरित्र मुख्य है। रूपा व कृष्णा को साधु का वेश धारण कर आये दो आदमी चुरा ले जाते हैं तथा किसी बदनाम औरत के पास बेंच देते हैं। गनेश उन्हें छुड़ाकर वापस घर पहुँचाते हैं, तथा इस धंधे में लगे लोगों को पुलिस को पकड़वा देते हैं। एक और आवाज बधुऑ मजदूरों की हताश निराश जीवन की कहानी है। इस एकांकी की मुख्य पात्र गोमती है। जो

अनपढ़ है, गांव में रहती है। उसका पति और वह दोनो काम करते हैं फिर भी उन्हें एक समय भी पेटभर खाना नहीं मिलता। उसका एक बेटा गोपाल है जिसे वह पढ़ाना चाहती है। वह शहर जाकर घर–घर काम करके अपने गोपाल को पढ़ाती है। जैसे उसे ज्ञात होता है कि सरकार ने बेगारी बन्द करवा दी। सभी के खेत वापस मिल जायेगें। वह गांव वापस आकर सबको लेकर जमींदार के पास जाकर अपना हक लेती है। गोमती साहसी तथा परिस्थितियों से हार न मानने वाली है। "अंधेरे से आगे" " मृदुला बिहारी ' का नाटक संग्रह है। इसमें पॉच नाटक– भॅवर, तीसरे रास्ते का राही,वे पॉच शब्द ,देहरी और अंधेरे से आगे संग्रहित है। भॅवर की रंजना पहले स्वेच्छा से पति के मना करने पर नौकरी ज्वाइन करती है। जल्दी ही बोर हो जाती है , घर परिवार तथा नौकरी की जिम्मेदारियों को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है। नौकरी छोड़ने का निर्णय लेती है। पर पति सुधीर मना करते हैं। परिस्थितियों से मजबूर रंजना स्वेच्छा से कुछ भी कर पाने में असमर्थ हो जाती है। "तीसरे रास्ते का राही" की अंजना प्रेमी अमित से व्याह न हो पाने पर नौकरी करती है। कुछ वर्षो पश्चात पत्नी की मृत्यु के बाद अमित उसे प्रस्ताव देता है पर प्रस्ताव को ठुकरा देती है ,तथा वह अमित के उसके बेटे को गोद ले लेती है। वे पॉच शब्द में माया मोची के बारे में गलत धारणा बना लेती है। पर सच्चाई जानने पर मोची के दु:ख से अन्दर तक भीग जाती है। मोची भी उसे आशीर्वाद देता है। सच में मोची की दुआ उसे लग जाती है। उसके पति को अच्छी जॉब जो वे चाहते थे ,मिल जाती है। देहरी की हीरा बाल विधवा है। बड़ी जिठानी के भाई समझदार चेतन के मिलने पर भी देहरी लॉघना उसके लिए मुश्किल पड़ता है। जानकी के पति ने उस अनपढ़ को अपने पास बुलाने से मना कर दिया। कल्याणी दीदी के मिलने पर उसे राह दिखती है। वह बी.ए. पास कर सभी को अपना समझकर सेवा करती है। अंजना ,जानकी,माया,हीरा,रंजना सभी अलग–अलग है पर सभी की समस्यायें एक सी हैं। एक समानता है वह है कुछ कर पाने की बेचैनी। वे जहॉ अपने को देखना चाहती है,किसी विवशता के कारण उन्हें वह सम्भव नहीं हो पा रहा है। भय,पीड़ा असुरक्षा अनेक बाधाओं से गुजरने के बाद ही कुछ पाने की आशा की, एक किरण मिल पाती है।

इन नारी लेखिकाओं के पात्र मानवीय धरातल पर प्रस्तुत हुए हैं जिनमें मानवजन्य स्वाभविक सबलतायें और निर्बलतायें है। इन नाटककारों ने विभिन्न घटनाक्रमों में अपने पात्रों को कभी तो परिस्थितियों पर छोड़ दिया है और कभी अनुकूलन के कारण आदर्श और

यथार्थ दोनो के संघर्षो को दर्शाया है। इनके नाटको के पात्र बहुत ही सजीव हैं,मनोवैज्ञानिक हैं,वर्गगत हैं और व्यक्ति भी हैं। कुछ हास्य– व्यंग्य प्रधान नाटकों के पात्र अत्यन्त बर्हिमुखी होते हुए भी भीतर से इतने अन्तर्मुखी हैं कि जब उनका असली रूप हमारे सामने आता है तो हम उनके चरित्र से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। अतः यह भली भाँति कहा जा सकता है कि आलोच्य नारी नाटक कारों की चरित्र सृष्टि बहुत ही मौलिक, परिस्थिति के अनुकूल और प्रभावी हैं।